मित्रता

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(सर्वश्रेष्ठ निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्‌वारा रचित निबंध `मित्रता' मानव-जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष-मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर रोशनी डालती है । एक विद्‌यार्थी के लिए अच्छे मित्रों का चुनाव करना अत्यंत आवश्यक है । उसकी सफलता या विफलता मित्रों के चुनाव पर ही निर्भर करती है । इस पाठ का उद्‌देश्य मित्रों के चुनाव में सहयोग करना है ।)

जब कोई युवा पुरुष अपने घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में पड़ती है । मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है, क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है । हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरंभ करते हैं, जबकि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है । हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है । हम लोग कच्ची मिट्‌टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले, चाहे राक्षस बनाए, चाहे देवता ।

ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़-संकल्प हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है । पर ऐसे लोगों का साथ करना और भी बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा । दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवकों को प्राय: बहुत कम रहता है । यदि विवेक-बुद्‌धि से काम लिया जाए तो यह भय नहीं रहता, पर युवा पुरुष प्राय: विवेक से कम काम लेते हैं । कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके सौ गुण-दोष को परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते । वे उसमें सब बातें अच्छी-ही-अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं । हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस–यही दो चार बातें किसी में देखकर लोग चटपट उसे अपना बना लेते हैं। हम लोग यह नहीं सोचते कि मैत्री का उद्‌देश्य क्या है, क्या जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है । यह बात हमें नहीं सूझती कि यह ऐसा साधन है, जिसमें आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है । एक प्राचीन विद्‌वान का वचन है, ''विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है । जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खज़ाना मिल गया ।'' विश्वासपात्र मित्र जीवन की औषधी है । हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम

हतोत्साहित होंगे तब हमें उत्साहित करेंगे । सारांश यह है कि हमें उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में वे हर तरह से हमारी सहायता करेंगे । सच्ची मित्रता में उत्तम बैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए ।

छात्रावस्था में मित्रता की धुन सवार रहती है । मित्रता हृदय से उमड़ पड़ती है ।

'सहपाठी की मित्रता'– इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल-पुथल का भाव भरा हुआ है । किंतु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शांत और गंभीर होती है, उसी प्रकार हमारी युवावस्था के मित्र वाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं । मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिसे हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे-छोटे काम ही हम निकालते जाएँ, पर भीतर-ही-भीतर घृणा करते रहें । मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें ।

मित्र भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना सकें । हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए । ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे । मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों । प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है । दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है । राम धीर और शांत प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यंत प्रगाढ़ स्नेह था । उन दोनों की मित्रता खूब निभी । यह कोई बात नहीं है कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है । समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं । जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों । चिंताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का । उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था । नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था ।

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है । यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है । किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-रात अवनति के गड्ढ़े में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो निरंतर उन्नति की ओर ले जाएगी ।

इंगलैंड के एक विद्वान को युवावस्था में राज-दरबारियों में जगह नहीं मिली । इस प्रकार जिंदगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा । बहुत-से लोग तो इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते । बहुत-से लोग ऐसे होते हैं, जिनके घड़ी भर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि उनके ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है । बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं । इस बात को प्राय: सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गंभीर या अच्छी बात नहीं । जिन भावनाओं को हम दूर रखना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद करना नहीं चाहते, वे बार-बार ह्रदय में उठती और ह्रदय को बेधती हैं । अत: तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों को साथी न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें । सावधान रहो । ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा अथवा तुम्हारे चरित्रबल का एक ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातों को बकने वाले आगे चलकर आप सुधर जाएँगे । नहीं, ऐसा नहीं होगा । जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है । धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी, पीछे तुम्हें इनसे चिढ़ न मालूम होगी, क्योंकि तुम यह सोचने लगो कि चिढ़ने की बात ही क्या है । तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा और तुम्हें भले बुरे की पहचान न रह जाएगी । अंत में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे । अत: ह्रदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगति की छूत से बचो । एक पुरानी कहावत है-

'' काजल की कोठरी में कैसो ही सयानो जाय ।
एक लीक काजल की लागि है पै लागि है ।।''

बुरे लोगों की संगति में जाओगे, अपने-आप को कितना भी बचाएँ- बुरा प्रभाव पड़ ही जाता है ।

शब्द-अर्थ

गुप्त - छिपाया हुआ, या छिपा हुआ, अदृश्य	आचरण- चाल-चलन
चित्त- मन, अंत: करण	अपरिमार्जित- बिना साफ किया हुआ, बिना धोया हुआ
प्रवृत्ति- मन का किसी विषय की ओर झुकाव, बहाव	अपरिपक्व- कच्चा
कुमार्ग- कुपथ,	मर्यादा- प्रतिष्ठा, परंपरा आदि द्वारा निर्धारित सीमा
निपुणता- निपुण होने का भाव या क्रिया	पथ प्रदर्शक- रास्ता दिखाने वाला
धीर- गंभीर, जो जल्दी विचलित न हो	उग्र-क्रुद्ध, भयानक
उद्धत- उग्र, प्रचंड	प्रगाढ़- बहुत गाढ़ा, घना, अत्यधिक
प्रफुल्लित- अति प्रसन्न	नीति-विशारद- नीति जाननेवाला, विद्वान
कुसंग - बुरे का संग, बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना	सद्वृत्ति - सदाचार, सद्व्यवहार
अभ्यस्त-जिसने अभ्यास किया हो	कुंठित- निराश
उज्ज्वल- चमकता हुआ, स्वच्छ, निर्मल	निष्कलंक- जिसमें कोई कलंक न हो, बेदाग

अभ्यास

बोध और विचार :

१. विश्वास पात्र मित्र को खजाना क्यों कहा गया है ?

२. कुसंग के ज्वर को सब से भयानक क्यों कहा गया है ?

३. कैसे लोगों का साथ हमारे लिए बुरा है ?

४. मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर मनुष्य जीवन की सफलता निर्भर होती है– आचार्य शुक्ल ने ऐसा क्यों कहा है ?

५. मित्र बनाते समय हमें क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?

६. भिन्न प्रकृति और स्वभाव के लोगों में भी मित्रता बनी रहती है- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? उदाहरण देकर समझाओ ।

भाषा-बोध :

१. निम्मलिखित (वाक्यांश) में अनेक शब्दों के लिए एक ऐसा शब्द लिखिए जो इस पाठ में प्रयुक्त हुए हैं :

(क) जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो...........

(ख) जिसकी इच्छाएँ बहुत ऊँची हों................

(ग) जो नीति का विशेष ज्ञाता हो..................

(घ) जो शुद्ध न हो.....................

(ङ) जो साथ पढ़ता हो...............

२. नीचे लिखे शब्दों के पुंलिंग रूप लिखो :

बुरी

अच्छी

कच्ची

सच्ची

अपनी

अनुभव विस्तार :

१. अच्छे मित्र की क्या क्या विशेषताएँ होनी चाहिए ? तुम इसकी सूची बनाओ ।

२. अच्छी संगति से लाभ और बुरी संगति से हानि विषय पर कक्षा में चर्चा करो ।

३. 'मेरा मित्र' अथवा 'मेरा सहपाठी' विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।